ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-11*December- 2021
Innovation The Research Concept

दलित चेतना के प्रेरणा स्रोत डा० अम्बेडकर

Dr. Ambedkar The Source of Inspiration of Dalit Consciousness

Paper Submission: 10/12/2021, Date of Acceptance: 20/12/2021, Date of Publication: 21/12/2021

स्वर्ण लता कदम
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
शहीद मंगल पाण्डे राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, माधवपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश

सारांश

बाबा साहेब के विचारों से दलितों को अपनी गुलामी का अहसास हुआ। उनकी वेदना को वाणी मिली, क्योंकि इस मूल निवासी समाज को बाबा साहेब के रूप में अपना नायक मिला। डॉ अम्बेडकर गांधी जी तथा कांग्रेस के विरोधी रहे और हिन्दू समाज तथा हिन्दू धर्म के आलोचक रहे। इसलिये इस देश में उनके विरूद्ध एक प्रतिकूल सा वातावरण बन गया। भारत सरकार ने अपनी कोई पदवी भारतीय संविधान के प्रमुख निर्माता को नहीं दी परन्तु अब डा० अम्बेडकर जनता से पदवियां प्राप्त करने में सब भारतीय नेताओं से आगे बढ़ गये किसी ने उनको 'आधुनिक मनु' कहा किसे ने '20वीं सदी का स्मृतिकार' कहा; किसी ने उनको 'भारत का बुकर टी वाशिंगटन' कहा; किसी ने 'भारत का डाक्टर - जान्सन' कहा; किसी ने 'भारत कहा अब्राहम लिंकन' कहा; किसी ने 'भारत का मार्टिन लूथर' कहा; किसी ने 'भारत का पाल राबर्टसन' कहा; किसी ने 'भारत का टामस जैफरसन' कहा। इन पदवियों का मूल्य यूनिवर्सिटियों की किसी भी डिग्री से कम नहीं है। प्रतिकूल परिस्थिति में वह स्वयं एक-एक कदम उन्नति के शिखर पर चढ़ते रहे और साथ ही दलितों का हाथ पकड़कर उनको भी ऊपर खींचते रहे। डॉ० अम्बेडकर की यह महानता थी कि वह समाज में उच्च स्थिति प्राप्त करने के बाद अपने दीनहीन दलितों को कभी भूले नहीं और उन्हीं के उद्दार में अपना जीवन समर्पित कर दिया। डॉ० अम्बेडकर के प्रयत्न के फलस्वरूप सारा अछूत समाज अपने राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक अधिकारों के प्रति सतर्क और सचेत हो उठा है। डॉ० अम्बेडकर तेजस्वी वक्ता और लेखक थे। वह महान् विचारक थे। उनकी विद्वता असाधारण थी और उनका कर्त्तव्य असाधारण था। डॉ० अम्बेडकर व्यक्ति नहीं थे बल्कि संस्था थे। भारत के इतिहास में उनका नाम और काम दोनों अमर बने रहेंगे। इस शोध पत्र का उद्देश्य ऐसे जुझारू और दृढ़ व्यक्तित्व वाले महापुरूष के विचारों एवं कार्यों से समाज के दलित वर्ग में जो परिवर्तन आया, उसको सबके सामने लाना है।

The thoughts of Babasaheb made the Dalits realize their slavery. His anguish got a voice, because this native society found its hero in the form of Babasaheb. Dr. Ambedkar was an opponent of Gandhiji and Congress and was critical of Hindu society and Hindu religion. Therefore, a hostile atmosphere was created against him in this country. The Government of India did not give any of its titles to the main architect of the Indian Constitution.But now Dr. Ambedkar has gone ahead of all Indian leaders in getting titles from the public, someone called him 'modern manu', who called him 'smritikar of the 20th century'; Someone called him the 'Booker T Washington of India'; Someone said 'India's doctor - Johnson'; Somebody said 'India said Abraham Lincoln'; Someone called the 'Martin Luther of India'; Somebody called Robertson the 'Pal of India'; Someone called 'the Thomas Jefferson of India'. The value of these titles is not less than any degree of universities.In the face of adversity, he himself continued to climb to the top of progress one step at a time and at the same time, holding the hands of the Dalits, kept pulling them up. It was the greatness of Dr. Ambedkar that after attaining a high position in the society, he never forgot his poor Dalits and dedicated his life to their salvation. As a result of the efforts of Dr. Ambedkar, the entire untouchable society has become alert and conscious about its political, social and economic rights. Dr. Ambedkar was a brilliant speaker and writer.He was a great thinker. His scholarship was extraordinary and his duty was extraordinary. Dr. Ambedkar was not a person but an institution. Both his name and work will remain immortal in the history of India. The purpose of this research paper is to bring to the fore the change brought about in the downtrodden section of the society due to the thoughts and actions of such a brave and determined personality.

मुख्यशब्दः वर्णभेद, दलित साहित्य, अछूतोंद्धार, अस्पृश्यता, परिवर्तन, 'मनुस्मृति', गुलामी, क्रांति, दलित चेतना

Keywords: Apartheid, Dalit Literature, Untouchability, Untouchability, Change, 'manusmriti', Slavery, Revolution, Dalit Consciousness

प्रस्तावना

बाबा साहेब डा० भीमराव अम्बेडकर ने दलित की स्थिति को परिभाषित करते हुये लिखा है - "दलित जातियाँ वे हैं जिसे अपवित्र माना जाता है, इसमें निम्न श्रेणी के कारीगर, धोबी, मोची, बाल्मीकि, बसौट सेवक जातियाँ जैसे - चमार, डंगारी (मरे पशु उठाने के लिए) सउरी (प्रसूति गृहकार्य के लिए ढोल, डफली बजाने वाले) कुछ दिनों पूर्व तक उनकी स्थिति अर्द्धदास, बंधवा मजदूर जैसी रही है।"

दलित चेतना के प्रेरणा स्रोत डॉ अम्बेडकर, गौतम बुद्ध, ज्योतिराव फुले व कबीर रहे हैं। खासकर डॉ० अम्बेडकर ने अपने समय में दलितों को उनकी गुलामी का अहसास कराया और उनकी सोयी हुई चेतना को जगाकर उन्हें बोलने के लिए विरोध करने के लिए मुखर वाणी प्रदान की।

हिन्दू समाज में वर्णभेद के बोझ से दबकर पतन की खाई में पशुतुल्य जीवन बिताने वाले करोड़ों दलितों को हाथ का सहारा देकर ऊपर उठाने वाले और उनको स्वाभिमान का सबक सिखाकर सही अर्थ में मनुष्य बनाने वाले डॉ० अम्बेडकर निस्सन्देह आधुनिक समय के मानव अधिकारों के अग्रदूत थे। अछूतोंद्धार के कार्य में उन्होंने अपना सारा जीवन लगा दिया। उन्होंने यह प्रतिज्ञा की थी कि यदि मैं अछूतोंद्धार तथा अश्पृश्यता निवारण के लिए कुछ कर न सका तो मैं अपने को गोली मारकर जीवन समाप्त कर दूंगा। उनकी इस वेदना को हिन्दू समाज और हिन्दू नेता समझ न सके। डॉ० अम्बेडकर अपने पवित्र ध्येय के प्रति सदावफादार बने रहे। वह जहाँ कहीं भी रहे, उनको अछूतों का ख्याल बराबर बना रहा। वैसे ही जैसे माँ को अपने बच्चों का। उन्होंने सस्ती लोकप्रियता को सर्वथा नगण्य तथा तुच्छा समझा।

धर्मग्रन्थों में लिखित परंपरावाद, अस्पृश्यता, जातीयता, वर्णव्यवस्था आदि नीच पद्धतियों का दलित काव्य में विरोध मिलता है। वास्तव में इसकी शुरुआत डॉ० अम्बेडकर द्वारा 'मनुस्मृति' का दहन करके की गई थी। जातिवाद का शिकार हर एक दलित हुआ है, इसलिए जातिवाद का भयानक छल कब तक सहा जाता? भयानक छल मतलब धर्म की पुस्तकों ने पाप पुण्य का डर बताकर मासूम दलितों को सदियों से मूलभूत सामाजिक सुविधाओं से वंचित रखा है।

जाति और वर्ण के आधार पर उन लोगांे को अपने मानवीय हक अधिकारों से वंचित होना पड़ रहा है, जो मान और सम्मान के अधिकारी है, उसके बदले समाज में उन्हें सर छुपाने की जगह भी मयस्सर नहीं होती। पढ़े लिखे दलित को भी एक अनपढ़, और गंवार गैर दलित अपमानित करता है। उत्पीड़ित करता है तो उस उत्पीड़न और अपमान के लिए जिम्मेदार हमारी जाति व्यवस्था और इस जाति व्यवस्था को तहस-नहस करने की प्रवृत्ति दलित साहित्य में खास उभर-कर आई है। संघर्ष का रास्ता, क्रांति का रास्ता कठिन तो है ही और इस रास्ते पर चलना हरेक के लिये आसान नहीं है पर क्रांति का जन्म दमन से होता है, जब जब दमन शोषण अत्याचार बढ़ता है और शोषित में सहनशीलता की सीमाएँ खत्म होती है उनकी धीरज का बांध टूटता है तब क्रांति का जन्म होता है, यह बात तो तय है कि जब उत्पीड़न की मात्रा बढ़ती तो प्रतिशोध की ध्वनि अपने आप उठने लगती है इसीलिए डा० अम्बेडकर ने कहा था कि "गुलामों को गुलामी का अहसास करा दो, वे खुद व खुद क्रांति कर उठेंगे।"

हिन्दू धर्म और संस्कृति ने दलितों को कभी अपना नहीं समझा। अगर प्रश्न किया जाये कि हिन्दू किसे कहें? इस धर्म के संस्थापक कौन है? आदि प्रश्नों का उत्तर प्राप्त नहीं होगा। वह कैसा धर्म जो एकता में भी अनेकता का निर्माण करके एक दूसरे के प्रति द्वेष करता है। एक ओर हम सब एक हैं कहते है। दूसरी ओर मंदिर प्रवेश, पानी के पीने को लेकर भेदभाव मानव-मानव में ऊँची नीच, छुआछूत की भावनाएँ रखना यह सब क्या है? किसी मुसलमान का परिचय पूछने पर वह शान से मुसलमान का परिचय देता है किन्तु किसी हिन्दू का परिचय पूछने पर वो अपनी जाति का परिचय देता है न कि धर्म का। सोचिए समाज के एक वर्ग को कष्ट पहुँचाकर मजा उठाने वाले इन महाचोरों का विरोध न करें, तो क्या इनकी पूजा की जाए?

डॉ० बाबा साहेब ने 'मनुस्मृति' जलाकर सिद्ध किया कि इस धर्म न्याय नहीं, शांति नहीं, अहिंसा तो कोसो दूर है। डा० बाबा साहेब के सामाजिक तत्वों को मान कर दलित साहित्यकार दलित समाज में आत्म सम्मान और धैर्य भरने का कार्य कर रही है।

साथ ही सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करके दलितों में अस्मिता जगाने का काम करती हैः-

"शूद्रों गुलाम रहते सदियां गुजर गई हैं।

जुल्मों सितम को सहते, सदियां गुजर गई हैं,

अब तो जरा विचारों सदियां गुजर गई है

अपनी दशा सुधारों, सदियां गुजर गई है।"

(स्वामी अछूतानंद)

भारत कें कुछ दलितों की स्थिति में आंशिक सुधार देखा जा सकता है, किन्तु हजारों वर्षों से चली आ रही परम्परा इतने कम समय में पूरी तरह से कैसे बदल सकती है? अतः आज भी परम्परागत शिक्षा से वंचित इस वर्ग के छात्रों के साथ विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में भी भेदभाव बरता जाता है। अब कोई द्रोणाचार्य किसी एकलव्य से अंगूठा मांगने का तो साहस नहीं कर सकता, हाँ उसे प्रैक्टीकल में फेल अवश्य कर सकता है। यदि कक्षा में प्रथम स्थान हो तो उसे छठे या सातवें स्थान पर खिसकाकर द्रोणाचार्य की परम्परा का निर्वाह कर देता है। ऐसी स्थिति में प्रेम, स्वतंत्रता, समानता बन्धुत्व और न्याय को तरसता व्यक्ति विद्रोही हो जाये तो कोई आश्चर्य की बात न होनी चाहिये। अब दलित जनता डॉ० अम्बेडकर के बताये हुये मार्ग पर चलकर स्वतंत्रता, समानता, बन्धुत्व व न्याय के लिए पढ़ने लगे हैं।

संगठित होने लगे हैं और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष भी करने लगे हैं। अब वह जान गया है कि हमारी स्थिति केवल राजनीतिक शक्ति ही बदल सकती है। जैसा कि डा॰ अम्बेडकर ने कहा था कि "हम अनुभव करते हैं कि दूसरा आकर हमारे दुःख दर्द दूर नहीं कर सकता और जब तक हमारे हाथों में राजनीतिक शक्ति नहीं आ सकती, हमारे दुःख दर्द दूर नहीं हो सकते।"

पिछले वर्षों में दलित चेतना, दलित आन्दोलन, दलित साहित्य ने साहित्य के आलोचकों, पाठकों, साहित्यकारों और सामाजिक चिन्तकों का ध्यान सबसे अधिक आकृष्ट किया है। दलित चेतना एक प्रतिबद्ध लेखन और सशक्त आन्दोलन का साक्ष्य प्रस्तुत कर रही है। जिस प्रकार बाबा साहेब के विषय में कहा गया कि "एक अछूत के हाथ में कलम आयी और उसने देश को 'संविधान' देकर अंधेरी बस्ती तक ज्ञान का उजाला फैलाया। जो आज तक गूंगे थे वे बोलने लगे। जो लूले लंगड़े थे वे चलने लगे जिनके हाथ में झाड़ू था उनके हाथ में 'खडंू' (कलम) आया। इस कलम के सहारे अपने दर्द को दलित साहित्य ने सृजनशील बनाया है।

"भारतीय साहित्य के लिए जो अनुभव आज तक अछूते थे उनको पहली बार 'अछूत' कहे गये साहित्याकारों की कलम ने स्पर्श किया और साहित्य में अम्बेडकरी विचारों की क्रान्तिधारा बने लगी। जहां इन्सानियत का अकाल पड़ा था, वहीं इन्सानियत का झरना बहने लगा। जाति के जेल में हजारों साल जिस प्रतिभा और प्रतिभावानों को कैद करके रखा था, वहीं गाँव के बाहर की प्रतिभा और प्रज्ञा मूल्यों की रोशनी लेकर आयी। अपनी साहित्यिक दृष्टि की अलग पहचान उसने बनायी।"

डॉ॰ अम्बेडकर की विचाराधारा केन्द्र 'मनुष्य' है। इसलिये उसकी सीमाओं के दायरे में पूरी मानवता समा जाती है। महात्मा गांधी ने दलितों ओर अस्पृश्यों को 'हरिजन' शब्द दिया लेकिन दलितों ने उसे स्वीकारा नहीं। गांधी जी दलितों पीड़ितों को 'हरिजन' कहते थे दलितों को वह गाली जैसा लगता है। दलित अगर 'हरि' के 'जन' हैं तो बाकी क्या पशुजन है? इस प्रश्न के साथ गांधीवाद के दलित इसलिए नकारते क्योंकि डॉ॰ अम्बेडकर कहते थे "गांधीवाद हमें तमो युग की तरफ ले जाता है और डा॰ अम्बेडकर चाहते थे कि दलित और बहुजन तमो युग की तरफ नहीं, ते जो युग की तरफ बढ़े।"

दलित चेतना हिन्दू परम्परा व संस्कृति के 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम' की अवधारणा पर विश्वास नहीं करती। वह स्वर्ग नर्क और पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करती। आत्मा परमात्मा उसके लिये कुछ नहीं है। वह स्वतन्त्रता, समानता, बन्धुत्व व न्याय में विश्वास करती है। डॉ॰ बाबा साहेब अम्बेडकर का शिक्षा, संगठन और संघर्ष दलित चेतना का बीज मंत्र है। वह हिन्दू-परम्परा व संस्कृति की देन अपमान, घृणा, दरिद्रता अशिक्षा व अछूतपन को अस्वीकार करती है। सीधे-सीधे वह बोध परम्परा की उत्तराधिकारिणी है। डॉ॰ अम्बेडकर ने महाघेर चन्द्र मणि से नागपुर में बौद्ध धर्म की दीक्षा ली थी। उसके बाद 5 लाख उनके अनुयायियों ने धम्म की दीक्षा ली। इसे दलित विमर्श में 'धम्मक्रान्ति' कहा जाता है। संसार में अनेक क्रांतियां हुई है। ये सब रक्त-रंजित, क्रांति पद, प्रतिष्ठा या पैसे के लिए नहीं हुई थी, यह क्रान्ति रक्तहीन क्रान्ति थी, रक्त की एक बंूद भी नही गिरी थी। डा॰ अम्बेडकर की इस 'धम्म क्रान्ति' की तुलना दुनिया की किसी भी ऐतिहासिक घटना या क्रान्ति से नहीं की जा सकती। जहां तक मेरा मानना है कि डा॰ अम्बेडकर की सामाजिक चेतना की दृष्टि कबीर, रैदास, चौखा मैला जैसे संत ज्योतिबा फुले व पेरियार जैसे जागरण कार और महात्माबुद्ध जैसे क्रांतिकारी महापुरूषों के प्रभाव से बनी है। अम्बेडकरवादी सोच समाज का समाजशास्त्रीय अध्ययन व विश्लेषण करके समकालीन परिस्थितियों के अनुकुल इतिहास को वही नहीं समाज को बदलने की पक्षधर है। डॉ॰ बाबा साहेब अम्बेडकर के नेतृत्व से उठी दलित राजनीतिक चेतना लोकतंत्र के 67 सालों की हवा पानी से प्रौढ़ हो गई है।

"यदि हिन्दू धर्म अछूतों का धर्म है, तो उसकी सामाजिक समानता को धर्म बनाना होगा, इसके लिए चतुर्वर्ण्य के सिद्धान्त जो कि जाति भेद तथा अस्पृश्यता का जनक है, का मटियामेट करना होगा। चातुर्वर्ण्य और जाति भेद दोनों अछूतों के आत्म सम्मान के विरूद्ध है।"

दलितों का हित चिंतक डॉ॰ अम्बेडकर से बढ़कर इस देश में दूसरा कोई नहीं हुआ। उनका दलितों को यह संदेश "झगड़ो और झगड़ों। त्याग करो और त्याग करो। त्याग और कष्ट की परवाह किए बिना सतत संघर्ष करते रहो। यही मुक्ति का मार्ग है।"

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य है, डा॰ भीमराव अम्बेडकर के चिंतन एवं विचारों को लोगों के समक्ष लाना है। अम्बेडकर जी ने अधिकार, न्याय व अस्मिता के लिये संघर्ष किया। आपका साहित्य अपने दुःख एवं पीड़ा की अनुभूति को अभिव्यक्ति प्रदान कराने के साथ-साथ शोषक वर्ग से सवाल जवाब भी करता है तथा वर्तमान में उत्पन्न सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक समस्याओं के समाधान देकर उनके निष्कर्षों से अवगत कराता है। डा॰ अम्बेडकर द्वारा अनुसूचित जाति की संकीर्ण दीवारों को त्याग कर उन्होंने विश्वव्यापी समाज की जो नींव डाली है उससे राष्ट्र का नवजागरण होता है।
विभेदवादी - आचार संहिताओं पर तार्किक दृष्ट से मूल्यांकन करते हुए आगे बढ़ना ही, इस शोध पत्र ने एक नवीन दृष्टि प्रस्तुत की है अम्बेडकर जी के विचार एवं उनका साहित्य पाठकों के मार्गदशन के लिए एक सशक्त माध्यम की भूमिका का निर्वहन करता है।

निष्कर्ष

डा॰ अम्बेडकर ने अपना अम्बेडकरपन कभी नहीं खोया। जैसा डा॰ अम्बेडकर का जीवन रहा, वैसा ही उनका संदेश था। अतः हम कह सकते हैं कि डॉ॰ अम्बेडकर जीवन त्याग और सतत संघर्ष की रोचक, रोमांचक तथा प्रेरक कहानी है। करोंड़ो दलितों के उद्धारक, वर्ण भेद के कट्टर विरोधी, सामाजिक समता के प्रबल समर्थक और हिन्दू कोड बिल के प्रस्तावक डॉ॰ अम्बेडकर आधुनिक समय के सर्वश्रेष्ठ क्रान्तिकारी समाज सुधारक थे। दलितों के हित चिंतक होने के नाते वह हिन्दू समाज के भी सच्चे हित चिंतक थे। उनकी विद्धता असाधारण थी और उनका कर्त्तव्य असाधारण था डॉ॰ अम्बेडकर व्यक्ति नहीं थे बल्कि संस्कार थे। भारत के इतिहास में उनका नाम और काम दोनों अमर बने रहेंगे।

सन्दर्भ

1. *डा॰ बाबा साहेब अम्बेडकर (संपूर्ण वाङमय) भाग 13 पृ॰-24*
2. *अपेक्षा-अंक 09, 2001, सं॰ तेज सिंह संपादकीय पृ॰ सं॰ - 04*
3. *सदियों के बहते जख्म, दामोदर मोरे, पृ॰ सं॰ - 45*
4. *दहकते अंगारे, प्रो॰ दामोदर मोरे पृ॰-15*
5. *डा॰ अम्बेडकर 'जीवन और दर्शन' विजय कुमार पुजारी पृ॰ सं॰ - 80*
6. *डा॰ अम्बेडकर 'जीवन और दर्शन' विजय कुमार पुजारी सम्यक् प्रकाशन, पृ॰ सं॰-27*